International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-01-2021, Accepted: 25-02-2021, Published: 16-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 71-74

नासिरा जी की नारी संबन्धी मान्यता एवं उपन्यासों में चित्रित कामकाजी नारी

Dr. Lija Achamma George
Assistant Professor, Department of Hindi, Baker College for Women, MG University, Kottayam, Kerala, India

सारांश
पुरुष समाज की नारी मुक्ति विरोधी अन्यायी सोच को दफनाने की क्षमता शिक्षा से ही प्राप्त हो सकती है। नारी की क्षमता को अवरुद्ध करने में सब से बड़ा प्रतिबन्ध है शिक्षा का। परम्परा से समाज ने यह स्वीकार किया था कि नारियों को पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं है, उन्हें कोई नौकरी - चाकरी तो करनी नहीं चाहिए, उस के लिए घर-गृहस्थी का काम सीख लेना ही पर्याप्त है। किन्तु आज माँ-बाप अपनी बेटियों को शिक्षित करने और नौकरी दिलवाने में आगे-आगे हैं। आज उनकी मान्यता है कि सुशिक्षित नारी कामकाजी बनेगी। पति-पत्नी दोनों एकसाथ कमाने से ही परिवार के अन्दर या पारिवारिक जीवन में रोशनी छा जाएगी। नारी अधिक सीमा तक स्वतन्त्र, कामयाबी, आत्मनिर्भर बनकर अपने आपको, परिवार को, समाज को, देश को उन्नति प्रदान कर सके। यही नासिरा जी की मान्यता और गवाह है।

मूलशब्द: स्त्री संघर्ष, अत्याचार, शिक्षा, कामकाजी नारी, नौकरी

प्रस्तावना
आज भी नारी संघर्षमयी जीवन जी रही है। ""स्त्री का संघर्ष बहुस्तरीय होता है। वह पुरुष की तरह एकायामी नहीं होता। घर के अन्दर एवं बाहर, मन के अन्दर व मन के बाहर इस संघर्ष की अभिव्यक्ति होती है। छोटे-छोटे मसलों में स्त्री अस्मिता का ज़द्दोज़हद व्यक्त हुआ है। छोटी-छोटी बातों, चीज़ों एवं संकुचित सुख की कामना उसकी अस्मिता की लडाई का अंग है। इसलिए स्त्री की प्राथमिकताएँ तय करना बेहद मुश्किल है।""[1]अब नारी में कुछ बदलाव व गतिशीलता अवश्य आ चुकी है। "शाल्मली" उपन्यास में शाल्मली अपने दोस्त से नारी के बीते हुए अच्छे युग का सबूत देते हुए कहती है - ""यही उस काल की सच्चाई थी कि पुरुष नारी को महत्व देता ही था और साथ ही उसे एक रचनाकार समझता था, क्योंकि तब उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि सन्तान उत्पत्ति में वह बराबर का साझीदार है। वह केवल उसे जननी ही नहीं मानता था, बल्कि आस-पास के वातावरण का ज्ञानी भी...."[2]यहाँ यह स्पष्ट है कि उस युग में नारी को पुरुष से भी अधिक ज्ञानी और सर्वगुण संपन्न मानते थे।
डॉ. अशोक बाचुलकर के अनुसार ""शाल्मली हर बार टूटती है। वह जी तोड़ कोशिश करती है कि पारिवारिक संबन्ध अच्छे रहें। .....शाल्मली पति-पत्नी संबन्धों को पारस्परिक समझ और बराबरी के स्तर पर समझती और नरेश को भी समझाने की कोशिश करती है।"[3] शाल्मली ऐसे समाज का सपना देखती है जहाँ नारी-पुरुष समानता कायम रहेगी - ""मैं पहले भी कई बार कह चुकी हूँ कि मेरे मन-मस्तिष्क में एक ऐसे समाज की कल्पना है, जहाँ कोई किसी का दास नही है, फिर एक बार मैं बता दूँ कि मैं पुरुष विरोधी न होकर अत्याचार विरोधी हूँ।"[4] यह नासिरा जी की अपनी ही मान्यता है। नारीवादी होकर पुरुष से लड़ने से बेहतर है कि नारी की व्यथा को समझकर उसकी बेहत्तर जिन्दगी के लिए उन्हें शिक्षा देने और स्वावलंबी बनाने की कोशिश करें।
उपन्यास में मिसेज़ खन्ना का सोच समकालीन यथार्थ है कि ""औरतें घर का पर्दा होती है, मिसेज कुमार, अपनी काया से घर की हर बुरी-अच्छी बात को छिपाए रखती हैं, यदि वह न हों, तो इन मर्दों का यह रंग एक क्षण में उतर जाए।"[5] उपन्यास में नासिरा जी नारी के प्रति पुरुष समाज की कठोर मानसिकता पर चिंतित है। औरतों का दुख-सुख पूछने और उनके हृदय की थाह लेने में अधिकांश पुरुष अपना अपमान ही समझ बैठते हैं। नासिरा जी ने इन पुरुषों की मान्यता पर आलोचनात्मक टिप्पणी दी है - ""वह तो पूर्ण संतुष्ट इसी एक बात से रहता है कि उसके कारण किसी औरत को सौभाग्यवती बनने का अवसर मिला। उसके अस्तित्व से किसी औरत को क्या शिकायत हो सकती है? उसकी शारीरिक मांगें पूरी हो ही जाती हैं। कपड़ा, खाना, रहना और सन्तान, यदि इसमें कमी हो, तो फिर उनका अपना भाग्य है, यह सोच मर्द की होती है। औरतों के बारे में।"[6] यहाँ पुरुष

अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व की सुरक्षा में सजग है। नारी के अस्तित्व पर अभी भी उन्हें सन्देहात्मक दृष्टिकोण मात्र है, सहयोग का विचार नहीं। क्योंकि पुरुष केवल अपने विचारों को बेहतर मानते हैं। स्त्री के विचार और सोच को वह बिलकुल अनसुना करता है।

नारी पुरुष से आदर मिश्रित प्रेम मात्र चाहती है किन्तु पुरुष अनपहचान होकर उसके साथ जीता है। "कागज़ की नाव" में लेखिका ने समकालीन विविध नारी रूप को अमजद भाई के द्वारा दर्शाने की कोशिश की है - ""पहली जो सिर्फ़ मुहब्बत देना जानती हैं, उनमें कुर्बानी, सब्र और सबको मिलाकर रखने की ललक होती है और इस ललक के चलते वे हर जुल्म-ज्यादती को सह लेती हैं। दूसरी वे होती हैं जो खुदगर्ज, नासमझ और जलन से भरी होती हैं। उन्हें सिर्फ वे खुद दिखती हैं या फिर अपना शैहर और बच्चे... तीसरी किस्म की औरतें बड़ी चालाक और अपने नफ़े-नुकसान को समझने वाली होती हैं। ....वे रिश्तों की जडों को पानी और खून से नहीं ज़हर से सींचती हैं। ....वे खुद चैन से रहती हैं मगर किसी को चैन से रहने नहीं देती हैं।"[7] आज और कल की औरत ऐसी ही है, बस लिबास बदलते हैं।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर औरतों की स्थिती को लेकर उपन्यास में जावेद का कहना समकालीन यथार्थ का विस्तार करता है। ""साउदी में देखो...... बस औरतों को लेकर वे मुख्यधारा से अलग नज़र आते हैं जबकि युद्धरत देशों जैसे फिलीस्तीन की औरतें इतना नहीं घुटतीं। सीरिया, लेबनान, पहले वाला इरक़ हर जगह औरतें दफ्तरों में काम करती नज़र आती थी और हैं।"8 औरतों की स्थिती कई विदेश राज्यों में पुरुष के बराबर है। दुनिया के अधिक पुरुष वर्ग आज भी औरत को एक दासी के रूप में देखना चाहते हैं। "औरत को आराम देना मर्दों का कर्तव्य बनता है और उसने उस धर्मपत्नी का सपना तोड़ दिया कि वह आधुनिक उपकरणों से सजे घर में एक दिन रहेगी।"[9] औरत की मानसिक स्थिती का सच्चा अनुमान कभी भी पुरुष वर्ग नहीं लगा सकता।

विदेशों में स्त्री के अत्याचार करनेवालों को तीव्र सज़ा दी जाती है। ""मध्यपूर्व देशों के कानून में औरत को जिस्मानी नुकसान पहुँचाना एक बड़ा जुर्म माना जाता है।"[10] आज भी हज़ारों औरतों की खून की सच्चाई छिपाई गई है या दबायी गई है। अरब राज्यों की तरह हमारे देश में भी नारी के साथ अत्याचार करनेवालों को उसी पल कडी से कडी सज़ा मिलनी चाहिए।

"ठीकरे की मंगनी" में नारी की जीवन स्थिति से बेचैन महरुख की माँ को नारी की आज़ादी के प्रति चिन्ताशील होते दिखाई देता है - "औरतों की खुशकिस्मती और बदकिस्मती के कितने बंधे-बंधाए दरें हैं। बरसों से चली आ रही यह सोच कब बदलेगी? कब औरत की कीमत ठीकरों और कौड़ियों से नापना बन्द होगा? कब उसे इन्सान समझ कर उसकी बोलियाँ लगनी बन्द होंगी? कब उसे मर्दों के सहारे के बिना दुनिया जीते देखना पसन्द करेगी? कब उसे अपनी तरह जीने की आज़ादी मिलेगी? आखिर कब?"[11] माँ के ये प्रश्न समाज से है। औरतों का फैसला और पसंद समाज से जुडा होता है। सदियों से चली आई नारी की आश्रित जीवन व्यवस्था अगर बदलाव का मौड़ पा लेती तो उन्हें समाज द्वारा अहंकारी का दर्जा दिया जाता है। ""यह उपन्यास महरुख के माध्यम से नारी के अन्तः साक्षात्कार का उपन्यास है, उसकी अपनी पहचान का उपन्यास है। यह उस नारी की गाथा है जो अपने आप को खोकर और कुछ पाना नहीं चाहती।"[12] यहाँ नासिरा जी ने नारी जीवन की सच्चाई को हमारे सामने स्पष्ट किया है।

नासिरा जी आज की स्वतन्त्र विचारवाली नारी के साथ है। जो सुशिक्षित आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी होकर अपने ऊपर लादी गयी अत्याचारों की केंचुली को उतार फेंक रही है। "नारी ने यह अनुभव किया कि पति-भक्ति और परिवार ही उसकी सीमा नहीं है वरन्, राष्ट्र, देश, जाति और समाज के विकास कार्यों में भी उसका सहयोग अपेक्षित है।"[13] आज की बदलती नारी घर के अन्दर और बाहर की कई जिम्मेदारियों को संभालती है। आज की कामकाजी नारियाँ पुरुष वर्ग को एक चुनौती बन चुकी हैं। नासिरा जी इसके साथ ही है।

कामकाजी नारी के जीवन में रोज़ कोई-न-कोई समस्या पैदा होती है। घर में अगर छोटे बच्चे के अलावा बड़े बुजुर्ग भी हैं तो नौकरी पर जाने की समस्या बड़ा विकट है। नियुक्त घंटे में घर पहुँचना भी उन्हें अनिवार्य है नहीं तो घर में भूकम्प लग जाएगा। "आजकल नौकरी करने वाली कई महिलायें ऐसे पुरुषों का शिकार हो जाती हैं, जो सभी तरह से ठीक-ठाक होते हैं, सामाजिक रुतबे वाले होते हैं, सुंदर होते हैं, अच्छे व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं, पैसा खर्च करने में समर्थ होते हैं, लेकिन वे स्त्रियों को केवल उपयोग की नज़र से ही देखते हैं। उनके प्रति उन्हें कोई भी सहानुभूति नहीं होती। नौकरीपेशा करनेवाली स्त्री को कुछ दिन बाद इस बात का ज्ञान होता है कि ऐसे पुरुषों से संबन्ध रखकर वे ठगी गई हैं।"[14]

आज के इस नवजागरण काल में कामकाजी स्त्री को समाज व परिवार में सम्मान प्राप्ति है फिर भी पुरुष उन्हें नीचे दिखाने की कोशिश भी करता है। आत्मनिर्भर कामकाजी नारी आज घर और बाहर सुखद स्थिती में है। वह तमाम उलझनों व समस्याओं को सहन कर, सब की देखभाल कर अपने कर्तव्यों का पालन करने से ही नारी होने का अनुभव करती है। निःस्वार्थ भाव से कार्यरत

मशीन का दर्जा देना उन्हें ज़रूरी है। भागदौड और लगातार बदलती तेज़ी जिन्दगी ने नौकरीपेशा महिलाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वास्थ्य का अनुभव दे दिया है।

"शाल्मली" की शाल्मली कामकाजी महिला होने के नाते सबकुछ एक साथ संभालते हुए थक जाती है। वह स्वीकारती है कि ""घर और दफ़्तर कुछ मिलाकर थकन तो हो ही जाती है।"[15] अपने घर की बदतर हालात से एक तरफ की रक्षा हेतु दफ्तर में वह काम पूरी ईमानदारी के साथ करती है। "जैसे-जैसे शाल्मली को नरेश एक विशेष दायरे में कसता चला गया, वैसे-वैसे शाल्मली को काम का दायरा दिमागी रूप से फैलता चला गया। अपने विचार, अपनी इच्छा, अपनी चेतना को वह अपने काम में साकार होते देखना चाहती। इसका फल यह निकला कि उसकी रिपोर्टों में, उसके काम में एक विशेष रंग छलकने लगा था, जो काम में सूक्ष्मता के साथ एक निष्ठा को भी दिखाता, जिसके कारण शाल्मली के लिए एक आदर-भाव अनजाने ही उसके जाननेवालों के मन में उभरने लगा था।"[16] नारी के लिए नौकरी एक वरदान ही है क्योंकि जिससे जिन्दगी के कई उलझनें कम हो जाएँगे।

शाल्मली का काम में जाना और कमाई करना पति नरेश पसन्द नहीं करता। वह शाल्मली से कहता है-

"तुम कहीं नहीं जाओगी, शाल्मली।"नरेश ने निर्णय दिया।

"क्यों भला?"शाल्मली चौंकी।

"मैंने जो कहा दिया, उसका पालन तुमको करना है, बस।" नरेश कठोर स्वर में बोला।

"यह नौकरी है, बिना कारण दिये मैं घर थोड़े ही बैठ सकती हूँ। शाल्मली ने बड़ी सहिष्णुता से कहा।"[17]

शाल्मली को पत्नी होने का अहसास जताने के लिए नरेश उस पर बिना कारण के रोष प्रकट करता है। "शाल्मली एक संपूर्ण स्त्री है - बुद्धि से प्रखर, सचेत, कर्तव्यपरायण आदि। शाल्मली के सामने नरेश कहीं टिक नहीं पाता है, अपने बौनेपन से कभी ऊपर नहीं उठ पाता है। नरेश शाल्मली की सर्वगुण संपन्नता से जहाँ अभिभूत दिखता है वहीं अंदर से आतंकित भी दिखता है। यही कारण है कि नरेश शाल्मली को उसकी संपूर्णता में नहीं स्वीकार पाता है।"[18] शाल्मली उससे बदले में कहती है - "सभी औरतें यदि इस प्रकार की अर्जी देने लगें, तो हो चुका काम। यह पति की नहीं, सरकार की नौकरी है, उसके प्रति कर्तव्य की अवहेलना....।"[19] यथार्थ में बहुत सारी कामकाजी औरतों के साथ परिवार में ऐसा बर्ताव और व्यवहार हो रहे हैं। नारी की कमाई के ज़रिए घर चलाने से बेहतर भूखे मर जाना पसन्द करता पुरुष समाज आज भी ज़िन्दा है। लेकिन पच्चास प्रतिशत पुरुष नारी नौकरी कर कमाई करने से सहमत है।

इस संदर्भ में कामकाजी औरत की दर्दनात्मक स्थिति को व्यक्त करते हुए नासिरा जी कहती है - ""कभी-कभी शाल्मली प्रतिदिन एक तरफ का काम करते-करते ऊब कर सोचने लगती थी कि उसमें और मशीन में अन्तर क्या है? क्या कल वह किसी पुरानी मशीन, पुरानी कुर्सी की तरह ऑफिस के कमरे से निकाल कर जंगयार्ड में फेंक दी जाएगी?"[20] शाल्मली, कामकाजी औरत होने के कारण नरेश उससे हीनता का अनुभव करता है। नौकरी के कुछ दिनों बाद शाल्मली ने महसूस किया था कि नरेश मित्रों के बीच बैठकर शाल्मली के जिस व्यवहार पर गौरव से भर उठता है, वही बातें घर में सहन नहीं करता था और बेमतलब खीजकर लड़ बठता था। आज का ही नहीं बल्कि लंबे अरसे से यह दृष्टव्य है कि पुरुष अपना अधिकार स्त्री पर जताने पर गर्व महसूस करता है।

"ज़ीरो रोड़" में कैथरीन अपनी ऑफिस की ज़िन्दगी के बारे में कहती है, "काम का भी सैटिस्फैक्शन नहीं है। मैं जिस अंग्रेज़ी पेपर में रिपोर्टर के रूप में काम करती हूँ वहाँ सब अपने लोग हैं। मेरा मतलब आप समझे न? मगर उनका बर्ताव ठीक लोकल लोगों की तरह हो गया है। वह लन्दन में होते तो मुझे औरत समझकर बर्ताव न करते मगर यहाँ वह ठीक अरब लोगों की तरह मुझे अहसास दिलाते हैं कि मैं औरत हूँ।"[21] औरत होने के नाते दूसरे वर्ग से उपहास और दुर्व्यवहार को झेलती अनेक कामकाजी नारियाँ हमारे पास हैं लेकिन आजकल वातावरण बदलता नज़र आता है। लड़कियाँ अपने संरक्षण के लिए उलटे जवाब और उलटे हाथ उठाने के लिए हिम्मत जुटाती नज़र आती हैं।

वास्तव में घरेलू काम करनेवालों से लेकर ऊँचे पद पर आसीन औरत तक की जिन्दगी अपने-अपने ढंग से संघर्षपूर्ण रहती है। घर के बाहर और अन्दर का काम एक साथ संभालना मुश्किल की बात है। परिवारवालों का विशेषकर पति का सहयोग और सम्मान उसे मिलना ही चाहिए। जिस परिवार या घर के लिए वह भगीरथ यत्न करती है, उसे पहचानकर उसकी सहायता और सराहना करना परिवारवालों का कर्तव्य है। यही नासिरा जी का दृष्टिकोण है।

निष्कर्ष

आज की नारी में शिक्षा की मदद से समझदारी और अकल आयी है। नारी ने अच्छी तरह समझ लिया है कि युगों से प्रचलित पराधीन नारी का वह फारमुला एकदम निरर्थक है। घर और बाहर काम करती नौकरपेशा नारी की जिन्दगी कठिनाइयों से गुज़रती है। दोनों क्षेत्रों को

संभालना उन्हें मुश्किल है। फिर भी समझदार और सहनशील कुछ नारियाँ दोनों कर्मक्षेत्र को कुशल रूप से संभालती नज़र आती है।आज नारी पुरानी विवशता, अप्रासंगिक लज्जा, दीनता आदि से मुक्त होकर निष्ठा से सफलता का इतिहास रच रही है। आज नारी की जीवन शैली, रहन-सहन, वैचारिक धारा आदि में बडा परिवर्तन आया है। आज अध्ययन, अध्यापन, फिल्म, संगीत-नृत्य, कला, संस्था के सर्वोच्च पद, सार्वजनिक संगठनों आदि अनवरत क्षेत्रों में स्त्री की सफलता दीखती हैं। नासिरा जी नारी की प्रगति के साथ है तथा नारी शोषण के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द कराने में आगे हैं।

संदर्भ सूची

1. जगदीश्वर चतुर्वेदी-स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, सं. 2000, पृ. 21
2. नासिरा शर्मा - शाल्मली, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम सं. 1987, पृ. 164-165
3. सं. कुसुम चतुर्वेदी-नया मानदंड (नवम दशक के महानगरीय उपन्यासों में दांपत्य संबन्ध), जनवरी-मार्च 2002, पृ. 33
4. नासिरा शर्मा-शाल्मली, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम सं. 1987, पृ. 165
5. वही, पृ. 151
6. वही, पृ. 85
7. नासिरा शर्मा-कागज़ की नाव, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2014, पृ. 67
8. वही, पृ. 235-236
9. वही, पृ. 238
10. नासिरा शर्मा - पारिजात, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम पैपर बैंक सं. 2014, पृ. 235
11. नासिरा शर्मा - ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं.1989, पृ. 134
12. डॉ. मुलचन्द सेठिया (ठीकरे की मंगनी) - प्रकर, अक्टूबर 1991, पृ. 142
13. शीला रजवार-स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ, ईस्टर्न बुक लिन्केर्स,
14. नई दिल्ली, सं. 1989, पृ. 72
15. डॉ. ए.एन. अग्निहोत्री - महिला सशक्तिकरण और कानून, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर,
16. प्रथम सं. 2008, पृ. 287
17. नासिरा शर्मा - शाल्मली, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम सं. 1987, पृ. 12
18. वही, पृ. 63
19. वही, पृ. 126-127
20. डॉ. ज्योति किरण-हिन्दी उपन्यास और स्त्री जीवन, राजमंगल पब्लिशर्स, अलीगढ़, सं. 2017, पृ. 58
21. नासिरा शर्मा-शाल्मली, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम सं. 1987, पृ. 127
22. वही, पृ. 131
23. नासिरा शर्मा-ज़ीरो रोड़, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 2000, पृ. 343